शहर में रात



मैंने देखा-
सूरज ने अपनी गोद से थके-
उनींदे
दिन को उतार दिया था
जैसे मां सोए बच्चे को उतार
बिस्तर पर सुला देती है और
खुद
दूसरे काम समेटने लग जाती
है
चांद के बिस्तर पर सोया दिन
अब
बच्चे की तरह बेफिक्र होकर
सो गया था
परन्तु यहां
स्वार्थी संसार अब भी जाग र
हा था।

अशोक दर्द

कुटिया का एक दीया



हर द्वार तक उजाला आग्या
जिसे देख प्रश्न उठता
रोशनी एक दिन अंधेरा
मिटाने क्यो आती
जब कि दीया हर रोज
जलने,उजास फैलाने को तत्पर
प्रत्युत्तर स्वयं दिमाग को

कौधिया देता
तेल, दीये मे हर रोज
कुटिया के चुल्हे की भूख मिटा
नही सकता
हर रोज साहूकार
दीपक मे पानी डाल चला जाता
हर रोज हमारे हाथ
दीपक जलाने को नही उठते
दीपावली कैसे मने

हर रोज हमारा मन
भूखे पेट आरती कैसे उतारे
सत्य है, पेट की भूख के आगे
दीये के तेल तक
हाथ नही पहुंच पाता
वैभव,समृद्धि चीखती
अट्टालिका
के कमरे मे ही उजाला भरती
आवाज दबा दी जाती

यह भी सच नही
वह केवल धनाराम सेठी की
देवी है
वह भू की देवी भी है
चिखती आत्मा है
भूखे डेहरी की मृगतृष्णा है
डेहरी के दीपक से पुरे घर को
शुभता से चमका सकती है
पर गरीब की डेहरी पर ठिठक
जाती है

अट्टालिका की रोशनी,उधार की
रोशनी होती है
गरीब के पेट की ज्वाला से
उनके घर की रोशनी जलती है
आज सकंट अन्धेरे का
नही,उजाले का है
उजाला धोखा है, फरेब है,कृतिम
है
इमानदारी का चीरहरण है
पूर्णिमा का आवरण,अमावस्या
के चारो ओर है
कुटिया के बाहर
लक्ष्मी के पेरो के छप,कुमकुम
से बन गये

उसे देखने को एक दीया ही
काफी है
'श्री' मे विश्वास
जिसमे असख्य
दीपक, फटे चिथडो मे छिपे
दिख। जायेगे

इसलिए अमावस्या को विश्वास
जलता
जगमगाते तन को ढांकती अन्दर
की रोशनी,
यह रोशनी लेकर लक्ष्मी के
सामने
खडे हो जा ओ तो
वर्ष मे एक दिन, एक दीपक
वर्ष भर प्रकाश देता रहेगा

अशोक चन्द्र जोशी
धार

मेरा दीया



मेरा दीया -
सूरज से कम नहीं है ।

इसी ने -
जीवन का अंधेरा पिया है ।
इसी के -
साथ मैंने उजास जिया है ।

इसे बुझा दे -
सूरज में दम नहीं है ।

इसी को -
घर ने बस दी है देहरियां ।
इसी ने -
घर में लुटाई हैं खुशियां ।

बुझ जाये मगर -
सूरज को ग़म नहीं है ।

हाथों की -
ओट दे , हवा से बचाया ।
हवाओं को -
कब इसने मुंह लगाया ।

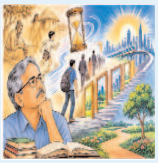
दीया कहे न -
सूरज - घर तम नहीं है ।

एक दीये से -
है रोशन यह घर मेरा ।
मेरे घर -
रोशनी ने डाला डेरा ।

ढलें सांझ को -
सूरज - से हम नहीं हैं ।

अशोक आनन
मक्सी

अतीत से भविष्य तक



कल्पनाएं कभी समांतर नहीं होतीं
अतीत से वर्तमान में उड़ती ही रहती हैं
समय जलती आग सी
नजरों के सामने फूटते हुए
कल्पनाएं बाढ़ सी उछल उछल पड़ती हैं
उठती उफनती जीवन की सांस
सदा एक सरल रेखा में
सफर करती रहती है
हड़बड़ा के पैरों के निशान सुधारते हुए
नए रास्तों पर सफर करते हुए
गहरी नींद में भी जगी हुई सुबह ही
आंखों के आगे घूमती रहती है
मनुष्य जहां होते हैं वहीं
मेरे अस्तित्व का स्पर्श
नई कल्पनाओं को दस्तक दे जगाती हैं
जिंदगी के युद्ध की शुरुआत से ही
यही सब हो रहा है
कतारों में खड़े कदम धीरे-धीरे
परत दर परत दरवाजों के पटों से
कदमों को ढकते वक्त
अतीत आशामयी हो
वर्तमान से होते हुए
भविष्य में झांक जाता है



डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

दोहा छंद



दुर्गम राहों पर उसे, सदा मिली है जीत।
जो हिम्मत करके चला, मौसम के विपरीत।।
मौसम के विपरीत जो, चलता बिना विचार।
जीत नहीं पाया कभी, हरदम मिलती हार।।
बड़े भाग्य की बात है, मिला आपका साथ।
जीवन भर मत छोड़ना, प्रिय अब मेरा हाथ।।
जन्मा भारत भूमि में, बड़े भाग्य की बात।
उस पर तन इंसान का, ईश्वर की सौगात।।
बीमारू उद्योग से, खतरे में हैं लोग।
दूषित है वातावरण, लगे हजारों रोग।।
दूषित है वातावरण, जलें धुएं से नैन।
पशु पक्षी हलकान हैं, नर नारी बेचैन।।
विस्फोटक के ढेर पर, बैठा यह संसार।
चिंगारी की देर है, विश्व युद्ध तैयार।।

सुरेश चन्द्र जोशी, उत्तराखंड, पिथौरागढ़।

स्वार्थों की आँधी चली, बिखरे नेह-प्रसंग।
रिश्तों के आँगन हुए, अब सूने बेरंग।।

आँसू पीकर जी रहा, मन में लिए सवाल।
किसको अपनी पीर कह, जग में सब बेहाल।।

चेहरे पर मुस्कान है, मन में भरा विकार।
मीठे बोलों में छिपा, मतलब का व्यापार।।

धन-दौलत के सामने, फीके हुए विचार।
मानवता की राह में, बढ़ते अत्याचार।।

रिश्तों की दीवार पर, स्वार्थों का अधिकार।
अपनों से ही आजकल, मिलता है तिरस्कार।।

दुनिया के बाजार में, बिकता प्रेम अपार।
सच्चे मन की चाह का, मिले नहीं आधार।।

ऊँची होती जा रही, महलों की मीनार।
छोटी होती जा रही, मन की सोच-विचार।।

लोभ बढ़ा तो प्रेम का, घटने लगा प्रभाव।
मन के रिश्ते खो गए, शेष रहे बस भाव।।

सुख में साथी सैकड़ों, दुख में सूना द्वार।
वक्त बताता कौन है, अपना सच्चा यार।।



- डॉ. सत्यवान सौरभ

माटी के दीपक जलें

पर्वों का राजा बना, दीपों का त्योहार।
सज-धज कर आया धरा, हर्षित है संसार।।

घर आँगन धो पोंछकर, सजते भवन मकान।
सजे रंग से घर सभी, सजते तोरण द्वार।।

माटी के दीपक जले, मिटे तिमिर अज्ञान।
पंक्ति पंक्ति में सजे,दीप करे उजियार।।

बिजली की झालर सजी,जगमग है सब लोक।
रंग बिरंगी रोशनी,नभ में चमक अपार।।

गुझिया लड्डू खीर को, बाँट पास पड़ोस।
मेवा मिश्री संग बाँट, सुंदर से उपहार ।?।

लक्ष्मी गण को पूजते,माँगे सुख कल्याण।
दीप जलाकर थाल में, भक्त करें मनुहार।?।

गोवर्धन पूजा करें, अन्नकूट का भोग।
सबको शुभ दीपावली,सुखमय हो परिवार।।

गोबर से लीपे सभी,गाँवो में घर आज।
रंगोली के रंग से , सजते हैं घर बार।।

सबका शुभ चाहे 'मनज',सबका मंगल गान।
सुख सेहत हर घर बसे, जीवन हो उजियार।।



पुरुषोत्तम सरसोदिया मनज
इंदौर मोबाइल नं 9425359836

इंसान की पहचान

अनुशासनहीनता की करें, हदें जो पार
बाहर करने में उसे, करें न सोच विचार

कुर्सी अब छूटे नहीं, इसको गले लगाय
इस पर रमेश बैठकर, खूब आनन्द उड़ाय

मांगीलाल क्या करता, करें नहीं रहमान
मुफलिस से दोनों हुये, आजकल परेशान

ऊपर से साधु लगता, भीतर से शैतान
ऐसे में कैसे करें, इंसान की पहचान

कोई सुनता है नहीं, किसे करें फरियाद
नेताओं ने कर दिया, सब कुछ ही बरबाद

मिठी बोली बोलिये, सभी के साथ आप
कर ना सके फिर शत्रु भी, कोई पश्चाताप

कुर्सी जब तक पास है, तब तक है वे खास
जिस दिन कुर्सी ना रही, आवे न कोय पास

लाज शर्म सब बेच दी, आता नहीं लिहाज
रमेश मिलेंगे पग-पग, ऐसे इंसान आज

आजादी की देखिये, कैसी है ये भोर
प्रजातंत्र की डाल पर, बैठा आदमखोर

बेवकूफ के सामने, बघारे नहीं ज्ञान
नहीं करेगा आपका, रमेश वह सम्मान

दिखे जी इस दौर का, देखो कमाल साफ
सच को मिलती हैं सजा, झूठे को इंसाफ

पैसों के हैं दास सब, पैसा है भगवान
मिले जहां से भी उसे, दे वहीं पर ध्यान

यूं तो उनमें गुण नहीं, बने गुणों की खान
ऐसे लोग आज सुखी, समझे भाई जान



रमेश मनोहरा
शीतला माता गली जावरा

इंतिख़ाब

छोड़ कर रुख़ पर नक़ाब आया नहीं,
छत पे बन कर वो मेहताब आया नहीं।

आईने से वो झगड़ता है अभी,
जैसा चाहा था शबाब आया नहीं।

कशमकश हुस्न-ओ-अदा की है वही,
अब तलक कोई जवाब आया नहीं।

गुफ़्तगू मासूम कलियों पर रुकी,
आज भी ख़त में गुलाब आया नहीं।

रोज़ मचले है ये कम्बख़्त दिल,
उस के नख़रों का हिसाब आया नहीं।

वो भी मसरूफ़ और तिश्ना हैं हम,
हाथ में जाम-ए-शराब आया नहीं।

हर तरफ़ वो ही दिखे मुझ को यहाँ,
दिल पे ऐसा दौर-ए-ख़राब आया नहीं।

कब तलक यूँ जिएँ दुनिया में भला,
दिल-पसंद इंतिख़ाब आया नहीं।

ज़िंदगी के वर्क़ उलटते रहे,
सामने बाब-ए-किताब आया नहीं।

रात भर तकिये पे मचले है 'अक्स',
आईने में कोई ख़्वाब आया नहीं।

नितिन पुरोहित उज्जैन अक्स

पूर्णिका

दीप पथ पर? जला रहा कोई।
इस तमस को मिटा रहा कोई।।

दूर से ही सही मगर लेकिन,
प्यार दिल से जता रहा कोई।

बिन बुलाए करीब आ? करके,
फ़र्ज़ अपना निभा रहा कोई।

नींद से आँख जब खुली देखा,
चाँदनी में नहा रहा कोई।

रास्ते से भटक गया जो भी,
राह उसको दिखा रहा कोई।

देश के लोग देश?? तोड रहे,
आग छिप कर लगा रहा कोई।

लूट कर माल ऐश करता जो,
नाम अपना कमा रहा कोई।

अब 'खरे' देशभक्त मिलते कम,
सिर्फ कुर्सी बना रहा कोई।

ओम प्रकाश खरे उ जौनपुर।

मन के आँगन में जलता दीप



गीत सृजन
मुखड़ा
मन के आँगन में जलता दीप,
आशा की किरणें लाता है।
घोर अँधेरों के बीच सदा,
जीने की राह दिखाता है।

जब दुख की बदली घिर आती,
जब मन में निराशा छाती।
विश्वास जगाता अंतर्मन,
नई सुबह फिर मुस्काती।
मन के आँगन में जलता दीप,
हर पीड़ा को सहलाता है।

मिट्टी का तन, बाती जीवन,
स्नेह बना इसका ईंधन।
त्याग-तपस्या से उजियारा,
प्रेम बना इसका दर्पण।
मन के आँगन में जलता दीप,
रिश्तों को जोड़ सिखाता है।

आँधी आए या तूफ़ान,
डिगने न देना अपना मान।
छोटी-सी लौ भी कहती है,
कर सकते हो जग में उत्थान।
मन के आँगन में जलता दीप,
साहस का पाठ पढ़ाता है।

मन में करुणा, कर्म में निष्ठा,
जीवन की सुंदर अभिलाषा।
दूसरों के पथ पर जलकर,
बाँटो प्रेम और सद्भावना।
मन के आँगन में जलता दीप,
मानवता का मान बढ़ाता है।

डॉ सुमन मेहरोत्रा 'सुरभि'
मुजफ्फरपुर, बिहार

दोपहर की धूप



सड़कें कुछ वीरान हुई हैं,
बाज़ारों में धीमी चाल है,
धूप ने जैसे रोक लिया हो,
दौड़ते जीवन का हर हाल।

दोपहर की धूप यह कहती है,
मत थकना संघर्षों से कभी,
जग को उजियारा बाँट रहा है,
वह गुज़रा है सदैव अंगारों से।

खेतों में श्रमरत किसान के,
माथे पर स्वेद चमकता है,
धरती की इस सूखी देह पर,
उसका परिश्रम दमकता है।

दोपहर की धूप सिखाती है,
समय का अपना तरीका है,
कभी तपन, कभी उजियारा,
जीवन भी ऐसा ही रंग है।

अनुराग उपाध्याय

दीयों के दिन आये



दीयों के -
फ़िर दिन आये ।

रोशनी ने -
द्वार खोले ।
डगमग - डगमग -
लौ डोले ।

तम से -
इनको घिन आये ।

आंधियों में -
ये न बुझते ।
हवामहल -
इनसे सजते ।

जुगनू भी -
इन बिन आये ।

बिन बाती -
जीवन सूना ।
लगे उस बिन -
दर्द दूना ।

बिछोह के -
पल गिन आये ।

घर के -
द्वार ये सजाते ।
रोशन -
घर कर ये जाते ।

दुर्दिन से -
शुभ दिन आये ।

अशोक आनन मक्सी

हे मोबाइल भैया इूबा दई नैया

सुबह शाम पकड़े है
कामधाम सब छोड़कर
लेकर बैठे है मोबाइल
ये बन गई है लत हमारी
लोकलाज सब भूलकर
सबकुछ देखत है अखियां

ये तोड़ रही सब रिश्ते नाते
अपने मे ही मदमस्त कराए।
व्हाट्सएप और फेसबुक
ने तो लुटवा दाई लाई हमारी।
रोग शोक सब भूलकर
ये मोबाइल में ध्यान लगाया काम
क्रोध

मोह लोभ सब अर्पित
कर मोबाइल किया समर्पित
हे मोबाइल भैया इंस्ट्राग्राम
में खूब रील बनाई बेशर्मी

की हद पारे कर दी हमने
अधनंगी नंगी तस्वीरे देखी
मन को कर विचलित
कृत्रिम साधन अपनाए
पाने सुख की चाहत में
हमने अपनो से दूरी बनाई

यूट्यूब से सीखे नए पैतरे
नित नई धोखाधड़ी और
बेईमानी के जन जन में
हुआ लोकप्रिय ये मोबाइल हमारा
डूबा

रहा नैया हमारी बन
रही है विकृत मानसिकता
और अब्द्य ने भी कहर
ढहाया है असली नकली
का सारा भेद मिटाकर
आदमी को नकारा बनाया

शिवकुमार दुबे इन्दोर

मौन हुआ संसार।



झूठ सजा दरबार में, सच खड़ा लाचार।
न्याय माँगता रह गया, पीड़ित बारंबार।।

मंजिल पाने की धुन में, भूला जग व्यवहार।
जीत मिली तो खो दिया, अपनों का संसार।।

समय बदलता जा रहा, बदले सबके रंग।
सुख में अपने साथ हैं, दुख में छूटे संग।।

कर्म किए निष्काम जो, उन्हें मिला सम्मान।
स्वार्थों में जो खो गए, खो बैठे पहचान।।

जीवन की हर राह में, मिलते कई सवाल।
हिम्मत जिसका साथ दे, उसका हो उजियाल।।

मजबूरी की बेड़ियाँ, बाँधें बारंबार।
फिर भी मन में पालिए, सपनों का संसार।

भूखे पेट नसीब में, श्रम का मिला उपहार।
मेहनत फिर भी झेलती, किस्मत की मार।।

निर्धन की आवाज को, सुने नहीं सरकार।
धनवानों के नाम पर, सजता हर दरबार।।

विपदा से मत हारना, रख मन में विश्वास।
रात भले ही हो कठिन, होगा नया प्रकाश।।

मानवता जब रो पड़ी, मौन हुआ संसार।
पत्थर दिल के सामने, रोया प्रेम अपार।।

लाचारी को तोड़कर, बढ़ता वही महान।
ठोकर खाकर जो उठे, जग में उसकी शान।।

डॉ. प्रियंका सौरभ

नई रोशनी की दीवाली

दीप कह रहे हैं - 'चलो फिर जलें' जग को रोशन करें,
अंधेरों से न डरकर अब, कोने - कोने में प्रकाश भरें।

दीपमाला में महालक्ष्मी के आगमन की रहती है शुभ भावना ,
हर मानव करता यहाँ धन, वैभव, और खुशहाली की कामना।

रंग बिरंगी रंगोली, हर घर आँगन में है सजती ,
जीवन ही उत्सव है, पल - पल यही ये कहती।



दीपावली की ये खुशी क्यूँ रहे बस एक ही दिन,
मन का गगन क्यूँ रहे सूना, प्रेम प्रकाश के बिन।

दीवाली की सच्ची सौगात लेकर आते दीपराज परमात्मा,
अंतर्मन के अँधियारे मिटाकर, ज्ञान का दीप जगाती आत्मा।

विश्वास की लौ जगती, बनता दीपमाला उत्सव महान,
जीवन बनता दिव्य और पावन, आता स्वर्णिम जहान।

मिठास होती रिश्तों में , अधरों पर मुस्कान स्नेहिल प्यारी,
मन आँगन में दीपावली होती, जगमगाती दुनिया सारी।

चलो आत्मदीप जगाएं, नई रोशनी की दीवाली मनाएं,
अज्ञान तम मिटाकर अंतस से, जीवन की चौखट सजायें।

रश्मि अग्रवाल
इंदौर

मुक्त छंद - रिश्ते



रिश्ते उम्र से नहीं, एहसासों से जिया करते हैं।
अनाम रिश्ते भी, ज़िंदगी भर साथ दिया करते हैं।

किसी वर्ग / मज़हब की बेड़ियों से मुक्त हैं ये रिश्ते।
सिर्फ एहसासों की बदौलत ताउम्र जिया करते हैं।।

एहसास में ही तो समाहित है संवेदनशीलता।
जिसे सुख - दुःख में हम महसूस किया करते हैं।।

चिंताजनक है रिश्तों में अब चौड़ी हो रही दरारें ।
आभासी दुनिया में रिश्ते मज़बूत बताया करते हैं

मोहन जोशी ' पीयूष 'इंदौर

बेटी की बिदाई

अबड़ु रोकर बेटी विदा हो रही, लेकर आंख में आसु।
जाने केसा है परिवार सभी, ससुर केसे सासु।।

प्रभु जग में कैसी रीत बनाई, जाई हो रही पराई।
माता दहाड़ मार मार रोई, पिता बहन सगी भाई।।

घर सखियां पास पड़ोसी छूटे, छूटे अपने पराएं।
नई जगह क्या दुख कष्ट मिलते,ये किससे कहें बताए।।

अब मां जैसा लाड़ कोन लड़ाए,भाई भी डाट न पाए।
बहन मेरी सहेली सी लागे,ये भी सपन होय जाए।।

सब परिजन मिल ढाढस बंधाएं,आंसु तो गिरते जाए।
ईश जाने क्या लेख भाग्य में,कोई लेख विधके बताए।।

अपनी आंखो में आंसु भरकर,भ ई बेन, भाभी आए।
बहन को कहे पति संग बिठाकर,हम लेने जल्दी आए।।
बहन ले बांह भाई से बोली, मां पिता का ध्यान रखना।
मैं तो हो रही अब से पराई,मुझ पर भी ध्यान धरना।।
आंसु पोछ कर बोला भाई, ऐसा न कहते पगली।
जब तक है जिंदा तेरा भाई, हम सब ते रे चिरकली।।
अब रोकर बिदा बेटी हो गई, देखे झांक खिड़की से।
सबने हाथ हिलाकर कर दी, दूर अपने घर जमीं से।।



मनोहर सिंह चौहान मधुकर